सामूहिक हित चिन्तन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पुनरुत्थान कार्यक्रम में नये–नये विषयों पर नये–नये विचारों से समाज को परिचित कराया जाता है। सामूहिक हित चिन्तन एक ऐसा विचार है जहां समाज के सभी लोगों के हित चिन्तन की चर्चा की जाती है। सामूहिकता का अर्थ है सबका साथ सबका विकास। हित चिन्तन में सबका कल्याण समाहित है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सभी के आवश्यकतों की पूर्ति समाज में होती है। रोटी, कपड़ा, मकान और चिकित्सा मानव की बुनियादी आवश्यकता है। मनुष्य की यह आवश्यकता समाज में ही पूर्ण होती है। मनुष्यों का समूह समाज कहलाता है और पशुओं का समूह समज कहलाता है। केवल एक मात्रा का अन्तर है, लेकिन अर्थ में बहुत अन्तर है। समाज में मनुष्य एक दूसरे के सुख दुःख में सहभागी होता है। एक दूसरे के उत्सवों में भाग लेता है। समाज में विभिन्न वर्गों और समुदायों के लोग रहते है। सबको अपने धर्म कर्म के अनुसार जीवन–यापन करने का अधिकार प्राप्त है। भारत में शासन की प्रजातन्त्रात्मक पद्धति है। यह एक ऐसी शासन पद्धति है जहां पर सबके हित चिन्तन की कामना की जाती है। प्रजातन्त्र में सामूहिक हित चिन्तन का बहुत महत्व है। बिजली, पानी, सड़क, विद्यालय, चिकित्सालय, रेलवे इत्यादि संस्थान किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि समाज के हर व्यक्ति के लिए है। सड़क पर सभी चलते हैं किसी एक वर्ग विशेष के लोग नहीं। बिजली पानी का उपयोग सभी अपनी आवश्यकता के अनुसार करते हैं। रेलगाड़ी का उपयोग समाज के सभी लोग करते हैं। प्रजातन्त्र में गरीब से गरीब और अमीर से अमीर व्यक्ति के लिए एक ही कानून है। सामूहिकता की भावना एक श्रेष्ठ भावना है। भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने 125 करोड़ भारतीयों के विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। उनका सामूहिक नजरियां स्पष्ट है। प्रजातन्त्र में जितनी भी योजनाएं बनायी जाती हैं वह सर्वसमावेशी होती हैं। सर्वोदय ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त समाज के सभी लोगों के उत्थान से जुड़ा हुआ है। भारतीय साहित्य में भी सबके हित चिन्तन की कामना की गई है।

सामूहिक का अर्थ है समूह का जीवन। सामाजिक जीवन मिलजुलकर परिवार, समाज, राष्ट्र में रहकर प्रेमपूर्वक जीवनयापन करना है। यदि हम रचनात्मक दृष्टि से विचार करेंगे तो सृष्टि से रचनात्मक दृष्टि प्राप्त होगी और यदि नकारात्मक दृष्टि से विचार करेंगे तो नकारात्मक शक्ति प्राप्त होगी। सबके साथ जीने का, चराचर जगत के साथ जीने का भाव होना चाहिए। आदर्श जीवन का अर्थ है समाज में ऐसा आचरण करना जो स्वयं के साथ–साथ दूसरे को भी प्रसन्न रखे। हम किसी को कष्ट न दें। जियो और जीने दो की भावना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। किसी भी प्राणी को अपने आचरण से कष्ट नहीं देना चाहिए। किसी को कष्ट देना, पड़ोसी को पीड़ा देना, बुरा आचरण करना आदर्श जीवन नहीं है। हमारे कार्यों से किसी को कष्ट नहीं होना चाहिए। किसी का शोषण नहीं करना चाहिए। आवश्यकतानुसार वस्तु का संग्रह होना चाहिए। किसी के हक को मारकर जीवन–यापन नहीं करना चाहिए। लालच का त्याग करके इच्छाओं पर नियन्त्रण करना चाहिए। काम, क्रोध, मद, लोभ जीवन को पतन की और ले जाते हैं। स्वार्थ की चेतना को छोड़कर परार्थ की चेतना और परार्थ की चेतना को छोड़कर परमार्थ की चेतना को जागृत करना चाहिए। भारतीय दर्शन में दुःख का कारण अज्ञान को बताया गया है। वैदिक साहित्य से लेकर सभी धर्मों के साहित्य में यह बताया गया है कि संतोष परमसुख है। जब संतोष रूपी धन आ जाता है तो सभी धन धूल के समान प्रतीत होने लगते हैं। कितना भी प्राप्त हो जाये परन्तु यदि संतोष नहीं है तो कोई लाभ नहीं। जहां मैं और मेरेपन का भाव रहता है तो इसका दुष्परिणाम बुरा होता है।

वैदिक साहित्य में सामुदायिक और आदर्श जीवन को श्रेष्ठ माना गया है। वहां कहा गया है कि हम साथ–साथ चलें, साथ–साथ कार्य करें, साथ–साथ भोजन करें, हमारे द्वारा धारण किया गया तैज ओजस्वी हो, हम किसी से द्वेष ना करें। सामुदायिक जीवन की यह उदात प्रेरणा है। वहां कहा गया है हमारा मन शुभ संकल्पों वाला हो। हमारे मन में किसी के विरुद्ध बुरा विचार न आवे। मानव जीवन समाज में रहकर ही फलता–फूलता है। यदि मनुष्य को समाज से अलग कर दिया जाये तो उसका जीना मुश्किल हो जायेगा। मनुष्य समाज में ही रहकर समाज से सीखता है और अपने जीवन का निर्माण करता है। बिना समाज के मनुष्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती। हम एक परिवार में रहते हैं, परिवार गांव में रहता है,

गावं से समाज बनता है और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। सद्भावना के द्वारा एक प्राणी दूसरे प्राणी के प्रति अच्छा भाव रखता है। जब भाव शुद्ध होता है तो बुद्धि शुद्ध हो जाती है, जिससे चिन्तन और मनन विधेयात्मक हो जाता है। इस सृष्टि में बहुत से प्राणी हैं। सभी के प्रति अपने समान व्यवहार करने का प्रयास करना चाहिए। जैसे दुःख हमें अप्रिय है वैसे ही दूसरों को भी यह अप्रिय होगा, ऐसा महसूस करना चाहिए। जो बात हमें अच्छी लगती है, वही दूसरों को भी अच्छी लगेगी, यही बात हमें सोचनी चाहिए और दूसरों का अहित नहीं करना चाहिए। सामूहिक हित चिन्तन में स्वार्थ को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना हमारी संस्कृति का आदर्श है। इसलिए व्यवस्था का लाभ सभी को मिले, यही सामूहिक हित चिन्तन है।